प्राक्कथन

बुधवार 22 अक्तूबर 2008

कहते हैं कि ईसाई धर्म बड़े दया, प्रेम व करुणा का धर्म है। आइए चलें उनके इतिहास में झाँककर देखें कि अपने इस दया, प्रेम व करुणा का प्रदर्शन उन्होंने किस प्रकार किया। आगे बढ़ने से पहले एक विषय पर अपनी धारणा को स्पष्ट कर लें, अन्यथा मैं जो कहना चाहता हूं उसका आप पर कोई प्रभाव न होगा। इतिहास को कभी बीती हुई बातें मानकर अनदेखा न करें। मेरी एक बात गाँठ बाँध लें। वह यह कि **जो इतिहास को एक बीते हुए दुःस्वप्न की संज्ञा देकर भुला देना पसन्द करते हैं, उन्हें भविष्य में केवल रोना ही पड़ता है।**

इस भविष्य के बारे में अपनी धारणा को भी आरंभ में ही थोड़ा स्पष्ट कर लें तो अच्छा होगा। बहुधा आपकी सोच अपने जीवन काल की परिधि में ही समा कर रह जाती है जब आप भविष्य की सोचते हैं। अपनी सोच को थोड़ा और आगे बढ़ायें। आपकी सन्तानें जब बड़ी होंगी और उनकी भी संतानें होंगी तब संभवतः आप जीवित रहें या न रहें पर वे भी आप ही के भविष्य का अंग होंगे। जिस प्रकार आपके पुत्र एवं पौत्र आपकी भविष्य का अंग हैं उसी प्रकार आपके प्रपौत्र एवं उनकी संन्तानें भी आप ही के विराट भविष्य के अंग हैं। **अतः जब अपने भविष्य की बात सोचें तो अपनी सन्तानों एवं उनकी सन्ततियों के जीवन काल को भी अपनी नजरों से ओझल न होने दीजिए।**

एक सावधानी और बरतना सीखिए। महत्वपूर्ण विषयों पर जब कोई धारणा बनायें तो केवल कथनी पर ही भरोसा न कीजिए। कथनी को करनी की कसौटी पर सदा परख कर देखने की आदत डालें। कारण बहुत ही सहज है। आज मानव की कथनी और करनी में बड़ा फ़ासला हुआ करता है। **यदि आप केवल कथनी पर भरोसा करेंगे तो बड़े धोखे खायेंगे।**

जब-जब धोखे खायें तो अपनी सन्तानों को आगाह करना न भूलें। उन्हें आपके अनुभवों से कुछ सीख तो मिलनी चाहिए। यह अलग बात है कि आपकी सन्ताने आज आपकी सुनना नहीं चाहती। पर क्या आप सदा से यही प्रतीक्षा करत रहे कि अभी तो वे बच्चे हैं, पढ़-लिख कर बड़े हो जाने दो, तब उनके साथ बाँटेंगे अपने अनुभव? जब वह समय आता है तो आप पाते हैं कि आपके बच्चे पढ-लिख कर अपनी सोच स्वयं बना चुके हैं और अब उन्हें आपके अनुभवों में कोई दिलचस्पी नहीं, वे अपने अनुभव स्वयं हासिल करना चाहते हैं। इस प्रकार नए सिरे से, नई सोच के आधार पर, अनुभव जुटाते-जुटाते उनका जीवन बीत जाता है और जब वे अपने अनुभव अपने बच्चों को देना चाहते हैं तब वे पाते हैं कि उनके बच्चे स्वयं अपने अनुभव जुटाने की तैयारी में लगे हैं। **जरा पीछे मुड़ कर अपने अतीत में देखिए, कहीं आपके साथ भी तो कुछ ऐसा ही नहीं हुआ?**

आज हम एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली के अंतर्गत जीते हैं जहाँ हमारा जीवन एक प्रयोग (एक्सपेरिमेन्ट) मात्र बन कर रह गया है। जब तक हमारा एक्सपेरिमेन्ट समाप्त होता है और हम उससे कुछ निष्कर्ष निकालने स्थिति में होते हैं तब तक हम अपनी जिन्दगी जी चुके होते हैं और हमारे बच्चे अपने-अपने जीवन की राहों पर अपनी-अपनी अलग-अलग यात्रा आरंभ कर चुके होते हैं। **न हम अपने अनुभवों से कुछ लाभ उठा पाते हैं न हमारे बच्चों में उन अनुभवों के प्रति कुछ रुचि होती है।**

आधार

आगे चलकर मैं आपके सामने जो भी तथ्य रखूँगा उनका आधार क्या है, आपके लिए यह जानना बहुत आवश्यक है। यदि मेरा आधार ही गलत हुआ तो आगे कही हुई सारी बातें बेमानी हो जायेंगी। अतः यह आवश्यक है कि मैं आपको सर्वप्रथम अपने संदर्भों से परिचित करा दूँ।

जो ऐतिहासिक तथ्य मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं उनका हिन्दी में उपलब्ध होना बहुत मुश्किल है, इस कारण आप मुझे अक्सर अंग्रेज़ी पुस्तकों से संदर्भ देते हुए पायेंगे। सच तो यह है कि हमारे देश में इस प्रकार के साहित्य का अंग्रेज़ी में उपलब्ध होना भी कुछ आसान नहीं। अतः सबसे पहले मैं आभार व्यक्त करना चाहूँगा वयोवृद्ध सज्जन **श्री पन्नालाल जी** का जिन्होंने मुझे शोध हेतु सामग्री प्रस्तुत की। यह श्रीनारायण की कृपा है कि उनसे मेरा संपर्क हुआ जबकि आजतक मेरा उनसे मिलना नहीं हो पाया है।

कर्नल रॉबर्ट ग्रीन इन्गरसोल (1833-1899) एक अमरीकी वकील तथा वक्ता थे। उनके सामाजिक महत्व का अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि उनकी यह मूर्ति अमरीका के इलिनॉयस प्रान्त के पेओरिया शहर में आज भी

वर्तमान है यद्यपि उनके मृत्यु के पश्चात एक शताब्दी से अधिक समय बीत चुका है। वे लिखते हैं "मैं पढ़ा करता था पुस्तकों मे कि किस प्रकार से हमारे पुरखों ने मानवता को सताया, पर कभी मैंने उन बातों को महत्व नहीं दिया। मैंने उन्हें पढ़ा पर उन बातों ने कभी मेरी आत्मा को कुरेदा नहीं। वस्तुतः मैंने कभी समझा नहीं उन अनैतिक व्यवहारों को जो धर्म के नाम पर किये गए, जब तक मैंने उन लौह तर्कों कोनहीं देखा जिनका प्रयोग ईसाई करते रहे"। यहाँ लौह तर्कों से उनका तात्पर्य रहा होगा लोहे के उन औजारों से जिन्हें उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से देखा। उन्होंने लौह तर्क शब्द का प्रयोग संभवतः इसलिए किया हो कि जो कुछ भी वह पढ़ते रहे थे वह उन्हें केवल तर्क (अर्थात वाद-विवाद के औजार) लगे होंगे जबकि लोहे के उन वास्तविक औजारों को देखने के बाद उन्हें इस बात की अनुभूति हुई होगी कि सत्य कितना क्रूर एवं भयावह था। यह तो हुई खैर उनकी बात पर जब आप यह पढ़ेंगे कि **आपके अपनों से, सुदूर योरप या अमरीका में नहीं बल्कि आपके ही गोवा में, ईसाइयों ने हिन्दुओं के साथ क्या-क्या किया तो आपको इस बात की अनुभूति होगी कि सत्य केवल क्रूर एवं भयावह ही नहीं बल्कि कितना घिनौना भी था।**

कर्नल इन्गरसोल की बात क्यों करें, मैं स्वयं भी जब प्रोफ़ेसर डी मेओ केआमन्त्रण पर इटली गया था और जब उनसे यह सुना कि किस प्रकार ईसाई धर्म के सर्वोच्च धर्मगुरु पोप गैर-ईसाई धर्मगुरुओं को जिन्दा ही खौलते तेल की कढ़ाइयों में डलवा देते थे तो मैने उन्हें सुना-अनसुना कर दिया। जब प्रोफ़ेसर मेओ ने मुझे वे इमारते दिखायीं जिनके तहखानों मे गैर-ईसाइयों को भयंकर यातनायें दी जाती थीं तो मैंने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उन इमारतों की बाहरी सुन्दरता को देखकर इस बात का अंदाजा लगाना संभव न था कि उन सुन्दर इमारतों के

अंदर कितना घिनौना इतिहास छुपा होगा। मेरे अविश्वास का कारण केवल इतना था कि मुझे उस इमारत के अंदर घुसकर उन सच्चाइयों के रहे-सहे अवशेषों को देखने की इजाजत न थी।

कुछ उसी प्रकार कर्नल इन्गरसोल भी पढ़ी हुई या फिर सुनी हुई बातों को उतना महत्व न दे पाये जबतक उन्हें स्वयं उन औजारों को देखने का मौका नहीं मिला। वह आगे लिखते हैं "मैंने देखा थंबस्क्रू (Thumbscrew) को - लोहे के दो छोटे-छोटे टुकड़े, अंदर की ओर कुछ उभरे हुए हिस्से ताकि वे खिसक न जायें, दोनों सिरों पर स्क्रू लगे हुए दोनों टुकड़ों को जोड़ने के लिए। और जब कोई व्यक्ति यह कहता कि वह बप्तिस्मा (Baptism ईसाई धर्म में दीक्षा) के अभीष्ट परिणाम[1] उत्पन्न करने की क्षमता में विश्वास नही करता, या फिर संभव है कि उसने कहा हो मैं विश्वास नहीं करता कि मछली ने आदमी को निगल लिया उसे डूबने से बचाने[2] के लिए, तब वे उसके अंगूठे को लोहे के दोनों टुकड़ों के बीच रखते, और प्रेम तथा सार्वभौमिक क्षमा के नाम पर दोनों टुकड़ों के स्क्रू को कसने लगते। जब ऐसा किया जाता तो अधिकांशतः लोग कहते कि मैं अपना मत बदलता हूं...जो व्यक्ति अपना धर्म बदलने को इस पर भी तैयार न होते उन्हें क्षमा न मिलती। वे थंबस्क्रू को अंतिम चरण तक कसते, और फिर उस पीड़ित व्यक्ति को किसी अंधकारपूर्ण तहखाने मे डाल देते जो पहले काराग़ार के रूप में काम आता था; और तब उस खामोशी में जिसमें मनुष्य को अपनी धड़कन तक सुनाई देती, वह उस व्यथा की पराकाष्ठा को भोगता जो उसने सुनी थी कथाओं में ईश्वर द्वारा दिए गए नरक की यातनाओं के बारे में। यह किया जाता था प्रेम के नाम पर - दया के नाम पर - दयालु ईसा के नाम पर। मैंने देखा उन्हें भी जिन्हें वे गले का यातना-पट्टा (Collar of Torture) कहते थे। कल्पना करें एक लोहे का वृत्त, जिसके अन्दर सैंकड़ों सूई जैसे चुभने वाले काँटे। इसे बाँधा जाता था उस व्यक्ति के गले में जिसे नर्क की यातना को भोगना था। तब वह न तो चल पाता, न ही बैठ पाता, न ही हिल-डुल पाता। हिलता-डुलता तो उस वृत्त के अन्दर के नुकीले सूई जैसे काँटे उसकी गर्दन में छेद कर देते। थोड़ी ही देर में उसका गला फूलने लगता और उसकी साँस अटकने लगती जो उसकी पीड़ाओं का अन्त कर देता। इस आदमी ने, संभव है, यह कहने का अपराध किया हो, गालों पर ढलते हुए आँसुओं के साथ, कि मैं नहीं मानता उस ईश्वर को, जो है तो हम सब का पिता, पर झोंक देगा हम मानव की सन्तानों को अनन्तकाल तक नर्क की आग में। मैंने देखा उस यंत्र को जिसे वे स्कैभेंजर्स डॉटर (Scavenger's Daughter) - सोचिए घास, पौधे आदि काटने की बड़ी कैंची (कैंचा) - जिसके दो हत्थे (मूठ) हों - केवल एक सिरे पर ही नहीं बल्कि उस सिरे पर भी जहाँ कैंचे के दो नुकीले सिरे मिलते हैं - और ठीक कीली (जो दोनों धारों को जोड़ता है) के ऊपर एक लोहे का वृत्त। ऊपर के दोनों मूठों में व्यक्ति के दो हाथ डाल दिए जायेंगे, नीचे के दोनों मूठों में व्यक्ति के दोनों पैर, और बीच में कीली के ऊपर लोहे के वृत्त में व्यक्ति का सर जबरन फँसा दिया जायेगा। इस अवस्था में उसे धरती पर औंधे मुँह पटक दिया जायेगा। यह स्थिति उसके शरीर की मांस-पेशियों पर ऐसा तनाव उत्पन्न करेगी जो उसे यंत्रणा के ऐसे छोर पर ले जायेगी जो शीघ्र ही उसके सारे कष्टों का अन्त कर देगी। मैंने रैक (Rack) को भी देखा। यह एक बक्सानुमा वैगन (मालगाड़ी का खुला डब्बा) था जिसके दोनों छोरों पर बेलन-चरखे (windlass) लगे हुए थे, लीवरों (lever किसी मशीन को चलाने या नियन्त्रित करने के लिए प्रयुक्त हत्था/मूठ) के साथ, रैचेट्स[3] के साथ उन्हें फिसलने से बचाने के लिए, दोनों बेलन-चर्खों पर जंजीरें चढ़ी हुई, कुछ को बाँधा जाता था पीड़ित के टखनों पर, बाकी जंजीरों को उसकी कलाइयों पर। उसके बाद प्रीस्ट (ईसाई धर्म के पुरोहित), क्लर्जिमेन (पादरी), डिवाइन्स (दैवी, ईश्वरीय व्यक्तिगण), सेन्ट्स (संत जन), सभी

[1] ईसाई धर्म ग्रहण करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी अन्यथा अनन्तकाल तक नर्क में सड़ना होगा

[2] बाइबिल के किसी कहानी की ओर संकेत है

[3] अंग्रेजी शब्दों के अर्थों के लिए मैंने अधिकांशतः ऑक्सफ़ोर्ड अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश ISBN 978-0-19-564819-5 (2003) का प्रयोग किया है। एक शब्द के कई अर्थ हुआ करते हैं। मैंने उस अर्थ को चुना जो मुझे विषय को ध्यान में रखते हुए सबसे अनुकूल लगा। जहाँ आवश्यकता पड़ी वहाँ मैंने फ़ादर कामिल बुल्के की अँगरेजी-हिन्दी कोश (1968) का भी प्रयोग किया। जहाँ समुचित अर्थ नहीं मिला वहाँ मैंने अंग्रेजी मूल के शब्द को ही देवनागरी लिपि में लिख दिया। उदाहरण के लिए स्कैभेंजर्स डॉटर का हिन्दी रूपान्तर इस विषय के संदर्भ में मुझे कुछ उपयुक्त नहीं लगा। या फिर रैचेट्स का अर्थ दोनों शब्दकोशों में नही मिला। हाँ, इन्टर्नेट पर मुझे रैचेट्स के विभिन्न डिज़ाइन मिले पर उन्हें शब्दों में व्यक्त करना कितना अर्थपूर्ण होग़ा कह नहीं सकता। ऐसे निर्णय मुझे अपने पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए लेना पड़ता है

मिलकर इन बेलन-चर्खों को घुमाने लगते, और घुमाते जाते, जबतक उस व्यक्ति के टखने, घुटने, कूल्हे, कंधे, कोहनी, कलाइयों की हड्डियाँ अपने-अपने स्थान से हटा नहीं दी जातीं और पीड़ित व्यक्ति दर्द की पराकाष्ठा तक नहीं पहुँच जाता। **बगल में एक डॉक्टर भी खड़ा होता जो लगातार उसकी नाड़ी की परीक्षा कर रहा होता। किसलिए ? उसके प्राण बचाने के लिए ? हाँ। करुणा से प्रेरित होकर - नहीं - केवल इसलिए ताकि वे उसे एक बार पुनः रैक कर सकें।**"[4]

[4] संदर्भ Robert G. Ingersoll, "The Liberty of Man, Woman and Child" in *The Works of Robert G. Ingersoll*, 12 vols. (New York: The Ingersoll Publishers, Inc., 1900), 1:334-37 as quoted by George Macdonald in ThumbScrew and Rack (American Atheist Press, P.O. Box 140195, Austin, TX 78714-0195, originally published circa 1904, ISBN 0-910309-68-X (1991)